

जीविषु KATHA. 23, 81. — c) *wonach man verlangt* (संप्राध्य) H. an. — d) *klug, verständig* AK. 3, 4, 162. H. an. Cit. beim Sch. zu H. 834. — e) = ध्रुव MED. — 2) n. Erdharz (शिलाजतु) AK. 2, 9, 104. H. 1062. an. MED.

अर्द्ध, अर्द्धति Dhātup. 3, 18. अर्द्धत्वे ved. ऋणात्ति Naigh. 2, 19. आनर्द्ध P. 7, 4, 71, Sch. Vop. 8, 53. 1) *in Bewegung (der Theile) gerathen, zerstieben, sich auflösen*: अर्द्धयत्तं सुवर्षः पर्वतात् अर्द्धन्धन्वानि सरयत्तं आपः RV. 4, 17, 2. विप्रोवासा मूदेवा अर्द्धत्वे 7, 104, 24. कृत्वास्य सं शीयन्ते श्लोणयो कात्मर्दति AV. 12, 4, 3. *gehen, sich bewegen* Naigh. 2, 14. Dhātup. अर्द्धति (caus. Form) *gegangen* Çabdar. im ÇKDr. — 2) *um Etwas (acc.) bitten* Dhātup. निर्गलितान्मूर्धं शरद्दने नार्द्धति चातको ऽपि Ragh. 5, 17. अर्द्धति (caus. Form) *erbeten* AK. 3, 2, 47. H. an. 3, 238. MED. t. 79. Vgl. अर्द्धना. — 3) *quälen* Kāç. Vop. 8, 52. *verwunden, tödten* Dhātup. 34, 22. रत्नः स-कृत्वाणि — अर्द्धति BHATT. 12, 56. Vgl. das caus. — caus. अर्द्धयति, अर्द्धि-दत्त oder अर्द्धयोत् Vop. 8, 86. 18, 1. die letztere Form ved. P. 3, 1, 51. का-ममर्द्धयत् Sch. 1) *in Unstätigkeit, in Unruhe versetzen, aufregen, erschüttern*: अग्निं क्रन्द स्तनयर्द्धयौधुम् AV. 4, 13, 6. 11. शीर्षा शिरो ऽप्स-साप्ते अर्द्धयन् 6, 49, 2. — 2) *verzerren*: अर्द्धयित्वानिलो वक्त्रमर्द्धति (s. d.) ज्ञानयत्ततः Suçr. 1, 253, 18. — 3) *beunruhigen, bedrängen, quälen*: तत एनं मन्त्रविगैरर्द्धयामास तेमैः । तानागतान्स चिच्छेद् MBh. 3, 16450. अ-सुराः — सुरगणमर्द्धयस्तदा 1, 1182. यैर्यमानाः सुभृषं तपस्तप्यति मा-नवाः 3, 11255. अर्द्धयमानावन्नोभिः R. 3, 14, 16. येन (धनुषा) अर्द्धिद्वैत्यपुरं पिनाकी BHATT. 2, 46. सूर्यरश्मिभिरर्द्धितम् R. 4, 38, 7. रात्रिः — अर्द्धिताः स्म भृशम् 3, 14, 11. व्यसनेनार्द्धितम् MBh. 3, 2505. विश्रामित्रार्द्धितान्दृष्ट्वा पङ्क्तवान् Viçv. 4, 20. भयार्द्धित 10, 4. कोपार्द्धित Çuk. 39, 13. योगवला- BRAHMA-P. in LA. 39, 2. नुधार्द्धित Hip. 2, 3. मदनार्द्धिता R. 3, 23, 14. — 4) *schlagen, verletzen, verwunden, tödten* Naigh. 2, 19. Dhātup. 34, 22. (व-मिन्द्र) अर्द्धयन्ता मनसा वृत्रमर्द्धयः RV. 10, 147, 2. अर्द्धयद्वृत्रमक्वणोडु लो-कम् 104, 10. अर्द्धयमिन्द्रमर्द्धय 8, 64, 10. VĀLAKH. 5, 2. परांशरं त्वं तेषां परांश्चं प्रुप्तेमर्द्धय AV. 6, 63, 1. विचरते ऽर्द्धयन्तर्वान्निष्कृत्वाप्रमोक्षारगान् R. 1, 16, 30. अर्द्धिदत्त BHATT. 9, 19. 13, 90. अर्द्धित *verletzt, verwundet* H. an. 3, 238. MED. t. 79. मुष्टिप्रहारदिभिरर्द्धति ऽङ्गे Suçr. 1, 288, 5. कुसुमेयुषा-र्द्धिता PANKAT. 224, 13. शास्त्ववाणादिर्द्धति तस्मिन् MBh. 3, 717. स तेः शीर्मु-र्द्धि — रात्रिसार्द्धितः R. 5, 42, 8. अर्द्धितपत्ताभिघाताचकित्सा Verz. d. B. H. No. 1003.

— अति *stark bedrängen*: अत्यर्द्धिद्विगलिनः पुत्रम् BHATT. 13, 115.

— अग्निं *bedrängen, peinig*: अग्निर्द्धसि मो सुदुःखम् R. 2, 21, 55. अग्नि-र्द्धित M. 1, 4116. अग्निर्द्धितो वृषलः । शीतेन पीडित इत्यर्थः P. 7, 2, 25, Sch. 24 wird auch अग्निर्द्धा (s. d.) *nahe* hierhergezogen.

— उद् *aufschlagen*, von einer Woge Çat. Br. 5, 3, 4, 5, 6.

— नि part. न्यर्णा P. 7, 2, 24. Vop. 26, 112. *aufgelöst, schwindend*: स कृ न्यर्णाः शिष्ये Çat. Br. 12, 7, 4, 10.

— निम् *ausströmen*: सो ऽस्यायं पराडिव प्राणो निर्द्धति Çat. Br. 4, 1, 4, 3.

— प्र caus. *abfließen machen*: तामामनु प्रवतं इन्द्र पन्थां प्रार्द्धयो नी-चौरपतेः समुद्रम् RV. 6, 17, 12.

— प्रति caus. *einen Andrang erwiedern*, mit dem acc.: मार्गणवर्षेण रामं प्रत्यर्द्धयद्वा R. 6, 92, 32. med.: प्रत्यर्द्धयत संकुद्धा राघवं पुनराकृवे 88, 2.

— वि part. व्यर्णा P. 7, 2, 24. Vop. 26, 112. 1) *wegfliessen*: या उर्मो व्य-

र्द्धतः Çat. Br. 5, 3, 4, 4. — 2) *bedrängen*: अग्निर्द्धा *nicht bedrängt* BHATT. 9, 19. — caus. *zerstieben machen, zerstören, vernichten*: यस्य त्रितो व्यो-जसा वृत्रं विर्वर्द्धयत् RV. 1, 187, 1. बर्द्धयत्ते वि परिर्द्धयो अर्द्धय 2, 23, 14. — सम् part. समर्णा P. 7, 2, 24. Vop. 26, 112. — caus. *verwunden*: यत्ता-रमस्य सकृसा त्रिभिर्वाणैः समर्द्धयत् MBh. 3, 761. तम् — वत्सदत्तैस्त्रिभिः पार्श्वं समर्द्धयत् 11724.

अर्द्धन (von अर्द्ध) 1) adj. a) *unruhig sich bewegend* Nir. 6, 33. — b) *in Unruhe versetzend, bedrängend*: वलं परवलाद्नम् Viçv. 4, 17. परपुरार्द्धन R. 2, 1, 33. Vgl. जनार्द्धन. — 2) f. °ना *das Bitten* AK. 3, 3, 6. H. 388. — 3) n. *Aufregung, Unruhe* Suçr. 1, 290, 17.

अर्द्धनि (wie eben) m. 1) *Krankheit*. — 2) *Bitte*. — 3) *Feuer* BHARATA zu AK. 3, 6, 19 im ÇKDr. Die Lesart अर्द्धनि für अर्द्धुर्द्ध verdient jedenfalls den Vorzug, da das letztere Wort nach 33 m. und n. ist. Die alphabetische Ordnung wird auch sonst verletzt.

अर्द्धित (wie eben) 1) adj. s. u. अर्द्ध. — 2) n. *Kinnbackenkrampf* (Trismus, Tetanus) H. an. 3, 238. MED. t. 79 (वातव्याधौ). Suçr. 1, 179, 20. 235, 18. 236, 3. 2, 43, 6. 232, 3. WISE 233. Nach Andern: *Haemiplegia*.

अर्द्धितम् (von अर्द्धित) adj. *am Kinnbackenkrampf leidend* Suçr. 2, 136, 14.

अर्द्ध (सध्) bildet vier Präsensformen: a) अर्द्धये, अर्द्धयाम्, अर्द्धयत्, im-
perf. अर्द्धयि; b) अर्द्धयति Dhātup. 26, 135; c) अर्द्धयति Naigh. 3, 5. Dhātup.
27, 23. अर्द्धयति; d) अर्द्धयि Naigh. 3, 5. अर्द्धयत्, अर्द्धयत्, perf. अर्द्धयिष्यत् P.
7, 4, 71, Sch. अर्द्धये, aor. अर्द्धयत्, prec. अर्द्धयिष्यम्. 1) *Gelingen* —, *Wohler-
gehen finden, gedeihen, glücklich sein* (वृद्धिः Dhātup.): अर्द्धयस्ते धिया
मर्तः शशमते RV. 6, 2, 4. इन्धानास्त्वा शतं किमा अर्द्धय AV. 19, 33, 4. अस्या-
मृद्धेद्वात्रायाम् Çat. Br. 1, 9, 4, 12. अर्द्धयाम् TAITT. Br. 3, 1, 2, 1. नात्रक्स त-
त्रमृद्धयति नात्रत्रं व्रक्ष वर्धते M. 9, 322. सपत्नान्धृतो दृष्ट्वा MBh. 2, 1693.
3, 12613. अर्द्धे dem es wohlergeht, in guter Lage H. 337. an. 2, 239. MED.
dh. 4. मन्दिर KUMĀRAS. 7, 53. राज्य Ragh. 2, 50. मठ Vid. 231. voll, von der
Stimme N. (Bopp, wo अर्द्धम् zu lesen ist) 12, 59. n. subst. neben अर्द्धि
VS. 18, 11. — 2) *fördern, gelingen machen, glücklich vollbringen, zu
Stande bringen* (परिचरणे Naigh. 3, 5): मरुतो स्तोममृद्धयाम् RV. 5, 60, 1.
अर्द्धयाम कर्मायसा नवेन 1, 31, 8. 2, 28, 5. 4, 10, 1. 10, 106, 11. य एषां भृत्या-
मृणयत्स जीवात् 1, 84, 16. यामृद्धये सधयत्तुतिम् 17, 9. अर्द्धयेति कृत्विष्क-
तिम् 18, 8. स अर्द्धयत् AV. 4, 39, 1. अर्द्धयाम्दे सरस्वति 6, 94, 3. ये भूतयत्तो
न वसेन्यानुधुः 2, 33, 1. मन्मोनि धीभिरुत यत्समृद्धयन् RV. 10, 110, 2. 3, 31,
2. VS. 8, 9. अर्द्धयि सूक्तवाकम् Çat. Br. 1, 9, 4, 4. तर्द्धयत्तर्द्धयत् 16. —
pass. in Erfüllung gehen: स काम अर्द्धयते Bṛh. Âr. Up. 5, 14, 7 (= Çat.
Br. 14, 8, 15, 10, wo समृद्धयते). *gedeihen*: ते च — लोके ऽस्मिन्धयते
वेन केतुना MBh. 3, 8488. अर्द्धयमाने Çat. Br. 3, 6, 2, 24. — 3) *genügen, be-
friedigen*, mit dem acc. der Person: अर्द्धयत एव तदेवान्धुवति Ait. Br. 1,
1. — caus. dass.: ये त्वां वृद्धयिष्ये अर्द्धयति AV. 7, 80, 4. अर्द्धयतार्द्धयित्वा
ज्ञामिः प्रदीपते परस्मै Nir. 3, 6. — desid. इत्सति (vgl. u. आ, उप und वि)
oder अर्द्धयिष्यति P. 7, 2, 49. 4, 55. Vop. 19, 8, 10; vgl. अर्द्धयिष्यति (Sch.
= वर्द्धयिष्यति) BHATT. 9, 32. — Verwandt mit राध् und वर्ध्.
— अर्द्धि *sich ausbreiten* (für eine Etym. gebildet): यदस्मिन्निदं सर्वम-
ध्वर्द्धयतिनाध्वर्द्ध इति Çat. Br. 14, 6, 9, 10 = Bṛh. Âr. Up. 3, 9, 9.
— अनु *vollführen*: अनु व्रतान्यर्द्धयतिर्द्धयतः RV. 7, 87, 7.